00905

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGALA - HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2013

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***सभी*** *प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किसी एक*** प्रश्न का लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए । 20

(क) बांग्ला और हिन्दीं की साहित्यिक परंपरा पर चर्चा कीजिए।

(ख) बांग्ला और हिन्दीं भाषिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिए ।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

কনে	বেদানা
হিসাব	হাতা
মহানাগরিক	তখন
উনুন	থেকে
হিংসা	চড়া

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए: 5

काफी	लिपिक
टिकाऊ	प्रवक्ता
कनेर	कानून
महावर	सुहागरात
खेतीबाड़ी	समधी

4. निम्नलिखित कहावतों - मुहावरों में से ***किन्हीं पाँच*** का हिन्दी अनुवाद करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग करें । 10

মাটি হওয়া

ঘরের শত্রু বিভীষণ

গলা ফাটিয়ে

কান পাতলা

আহ্লাদে আটখানা

যেমন কর্ম তেমন ফল

কেঁচে যাওয়া

অতি ভক্তি চোরের লক্ষণ

ক অক্ষর গো মাংস

ঘর জ্বালানো পর ভুলানো।

5. निम्नलिखित में से ***किन्हीं तीन*** के हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

3x15=45

(a) এ যেন পাহাড়ের ওপরে ওঠা রেলগাড়ি খানিকটা এগোয়, আবার কিছুটা পিছিয়ে আসি। কখনো তরতর করে বেশি ওপরের দিকে উঠতে গেলে ভেঙে পড়ে যায় নীচে

কখনো এক একটা ধ্বনি ওঠে, মানুষ হাতে হাত মেলায়

এ ওকে আলিঙ্গনে টানে বুকের কাছে

আধখানা শতাব্দী যেতে না যেতেই

সেই সব হাতে ঝলসে ওঠে ছুরি।

কখনো সব কামরায় হুড়মুড় করে উঠে পড়ে

টিকিট না কাটা যাত্রী

রাজতন্ত্রকে চিবিয়ে চুষে খায় গনতন্ত্র

আবার এক একটা যুগে গনতন্ত্রের পিঠে চাবুক কষায়

দু' একখানা নেপোলিয়ান আর হিটলার

(b) আর যাই বলো, প্রতিজ্ঞার একটা মাত্রা থাকা দরকার। যা-তা, যেমন তেমন একটা ব্যাপার নিয়ে প্রতিজ্ঞা করলেই হলো ? মামার যেমন কান্ড। আর যেন কিছু পেলেন না, কলা খাবেন না- এই প্রতিজ্ঞা। একেবারে ধনুষ-বাঁকা পণ। কেনরে বাপু, পণ করবার আর কি কিছু ছিল না ? আম , জাম , লিচু, আনারস অনেক কিছুই তো ছিল- এমন কি ইচ্ছে করলে ভাতের ওপরও প্রতিজ্ঞার দড়ি- ছেড়া হামলা চালাতে পারতেন। কিন্তু সেসব ছেড়ে-ছুড়ে কলার ওপর আক্রোশ কেন! আরে তুমি প্রতিজ্ঞা করবে করো- একবার কেন, একশো বার করো- কিন্তু তার জন্যে আমাদেরও হাঙ্গামা পোহাতে হবে , এ কেমনতরো কথা। মামার জ্বালায় নাকি বাড়িতে কলা আনবারও জো নেই। কলা দেখলেই তিনি আগুন হয়ে ওঠেন। দেখ দেখি কান্ডটা। এসব কি আর আগে জানতাম ছাই।

(c) ছেলেবেলা থেকে আমি গ্রন্থবিলাসী, নতুন বইএর খবর পেলেই কিনে আনি। আমার শত্রুরাও কবুল করবে যে , সে বই পড়েও থাকি। বন্ধুরা খুবই জানেন যে পড়ে তা নিয়ে তর্ক বিতর্ক করতেও ছাড়িনে।- সেই আলোচনার চোটে বন্ধুরা পাশ কাটিয়ে চলাতে অবশেষে একটিমাত্র মানুষে এসে ঠেকেছে, বনবিহারী, যাকে নিয়ে আমি রবিবারে আসর জমাই। আমি তার নাম দিয়েছি

কোনবিহারী। ছাদে বসে তার সঙ্গে আলাপ করতে করতে এক একদিন রাত্তির দুটো হয়ে যায়। আমরা যখন এই নেশায় ভোর তখন আমাদের পক্ষে সুদিন ছিল না। তখনকার পুলিশ কারও বাড়িতে গীতা দেখলেই সিডিশনের প্রমান পেত। তখনকার দেশভক্ত যদি দেখত কারও ঘরে বিলিতি বইএর পাতা কাটা, তবে তাকে জানত দেশ বিদ্রোহী।

(d) বেড়ালটা দুধটাকে চেটেপুটে খেয়ে ঠোঁট চাটতে চাটতে ঘর থেকে বেরিয়ে যায়। বেশ খুশি খুশি দেখাচ্ছে ওকে। শ্লথ পায়ে হাঁটতে হাঁটতে একবার থামে বেড়ালটা, বড় হা করে একটা হাই তোলে। তারপর বসে পড়ে সামনের ডান পা দিয়ে গলা চুলকোয়। জিভ দিয়ে পা চাটে। এসব করে ও অনায়াস ভঙ্গীতে নির্ভয়ে। দরজা ঠেলে বেরোবার সময় আমার দিকে ফিরে 'ম্যাও' করে একবার ডাকে। একটু লেজ নেড়ে দেয়। আমি ওর কৃতজ্ঞতা বোধ দেখে কৃতার্থ হই। কেননা জ্ঞান হওয়া ইস্তক শুনে আসছি জীব জন্তুদের মধ্যে বেড়াল নাকি এক নম্বরের অকৃতজ্ঞ। সব সময় গৃহস্থের অমঙ্গল কামনা করে। এই বেড়ালটি আজ সে ধারণা ভেঙ্গে দিল। গোটা বেড়াল জাতটাকে অসম্মানের হাত থেকে বাঁচাল যেন ও। এরকমই মনে হয় আমার।

(e) কিন্তু স্বাধীনতা শুধু কেবল একটা নাম মাত্রই তো নয়। দাতার দক্ষিণ হস্তের দানেই তো একে ভিক্ষার মত পাওয়া যায় না- এর মূল্য দিতে হয়। কিন্তু কোথায় মূল্য ? কার কাছে আছে ? আছে শুধু যৌবনের রক্তের মধ্যে সঞ্চিত। সে অর্গল যতদিন না মুক্ত হবে, কোথাও এর সন্ধান মিলবে না। সেই অর্গল মুক্ত করার দিন এসেছে। কোন ক্রমেই আর বিলম্ব করা চলে না। কি মানুষের জীবনে, কি দেশের জীবনে, জীবন-মৃত্যুর সন্ধিক্ষণে যখন শূন্য দিগন্ত থেকে ধীরে ধীরে নেমে আসতে থাকে, তখন কিছু না জেনেও যেন জানা যায়, সর্বনাশ অত্যন্ত নিকটে এসে দাঁড়িয়েছে। ক্ষুদ্র পল্লীর অতিক্ষুদ্র নরনারীর মুখেও পরেও আমি তার আভাস দেখতে পাই। চারিদিকে দুর্বিসহ অভাবের মধ্যে কেমন করে যেন তারা নিঃসংশয়ে বুঝে নিয়েছে- এ দেশে এ থেকে তার নিষ্কৃতি নেই, দুর্নিবার মরন তাদের গ্রাস করলে বলে।

এদের বাঁচাবার ভার তোমাদের। এ ভার কি তোমরা নেবে না ? জগতের দিকে দিকে চেয়ে দেখ- এ বোঝা কে বয়েছে। তোমরাই তো! শুধু এ দেশেই কি তার ব্যতিক্রম হবে ? শক্তি-স্বস্তিহীন সম্মানবর্জিত প্রাণ কি একা ভারতের তরুণের পক্ষে এতবড় লোভের বস্তু ? দেশকে কি বাঁচায় বুড়োরা ? ইতিহাস পড়ে দেখ।

6. निम्नलिखित का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 15

सामने आँगन में फैली धूप सिमटकर दीवारों पर चढ़ गई और कंधे पर बस्ता लटकाए नन्हे-नन्हे बच्चों के झुंड-के-झुंड दिखाई दिए , तो एकाएक मुझे समय का आभास हुआ .... घंटा भर हो गया यहाँ खड़े खड़े और संजय का अभी तक पता नहीं ! झुंझलाती सी मैं कमरे में आती हूँ । कोने में रखी मेज पर किताबें बिखरी पड़ी हैं , कुछ खुली, कुछ बंद । एकक्षण मैं उन्हें देखती रहती हूँ फिर निरुद्देश्य- सी कपड़ों की अलमारी खोलकर सरसरी - सी नजर से कपड़े देखती हूँ। सब बिखरे पड़े हैं । इतनी देर यों ही व्यर्थ खड़ी रही; इन्हें ही ठीक कर लेती। ..... पर मन नहीं करता और फिर बंद कर देती हुँ ।

नहीं आना था तो व्यर्थ ही मुझे समय क्यों दिया ? फिर यह कोई आज ही की बात है ? हमेशा संजय अपने बताए हुए समय से घंटे-दो घंटे देरी करके आता है, और मैं हूँ कि उसी क्षण से प्रतीक्षा करने लगती हूँ । उसके बाद लाख कोशिश करके भी तो किसी काम में अपना मन नहीं लगा पाती। वह क्यों नहीं समझता कि मेरा समय बहुत अमूल्य हैं; थीसिस पूरी करने के लिए अब मुझे अपना सारा समय पढ़ाई में ही लगाना चाहिए । पर यह बात उसे कैसे समझाऊँ ।

अथवा

लालटेन की चिमनी नीचे से आधी काली हो रही थी। वचन को उसे साफ करने का उत्साह नहीं हुआ। अँधेरा होने लगा तो उसने जैसे कर्त्तव्य पूरा करने के लिए उसे जला दिया और अज्ञात देवता के आगे हाथ जोड़ने की प्रक्रिया पूरी करके घुटनों पर बाहें रखकर बैठी रही। सामने मोढ़े के नीचे लाली का कार्ड रखा था। वह उन अक्षरों की बनावट जानती थी, पर हजार आँखें गड़ाकर भी उनका अर्थ नहीं जान सकती थी। बिन्नी के सिवा हिंदी की पढ़ने वाला कोई न था। बिन्नी से चिट्ठी पढ़वाकर भी उसे सुख नहीं मिलता था। वह लाली की चिट्ठी इस तरह पढ़कर सुनाता था , जैसे वह उसके बड़े भाई की चिट्ठी न होकर राली के किसी गैर आदमी के नाम आई किसी नावाकिफ आदमी की चिट्ठी हो। दो मिनट में वह पहली सतर से लेकर आखिरी सतर तक सारी चिट्ठी बाँच देता था और फिर उसे कोने में फेंककर अपनी इधर उधर की हाँकने लगता था । हरबार उससे चिट्ठी सुनकर कुढ़ जाती थी , पर बिन्नी उसे नाराज देखता तो तरह - तरह की बातें बनाकर उसे खुश कर लिया करता था ।